तीन बीज हर एक को बोने हैं - 1- शुभ भावना 2- कल्याण भाव और 3- निःस्वार्थ साधना

(मानेसर (दिल्ली) की नई जमीन पर फाउण्डेशन सेरीमनी) आज अमृतवेले बापदादा के पास पहुँची तो क्या देखा, बापदादा बहुत-बहुत प्रेम के सागर स्वरूप में सामने खड़े थे। ऐसा प्यार का स्वरूप इमर्ज था - जैसे सागर में नदियाँ जाकर समा जाती हैं, ऐसे आप सब आये हुए और अन्य भी बहुत प्रेम सागर में, प्रेम में लवलीन हो रहे हैं। मैं भी कुछ समय तो उसी समाये हुए रूप में खोई हुई थी। फिर बाबा ने पूछा बच्ची क्या सन्देश लाई हो ? मैं बोली बाबा, आज तो चारों ओर के विशेष ब्राह्मण आपकी दी हुई गिफ्ट देहली की जमीन पर पहुँचे हुए हैं। बाबा बोले बच्ची, देहली को तो बहुत बड़ी गिफ्ट मिली है। मैं बोली बाबा यह धरनी तो आपने बेहद के सेवा प्रति दी है, तो सर्व की है ना ! बाबा बोले हाँ बच्ची सबके राज्य की गद्दी तो देहली ही है। सबसे पूछना आप सबको याद है कि आप सबने कितने बार

यहाँ राज्य किया है ? (अनगिनत बार) तो आप सबकी हुई ना। तो मैंने कहा बाबा सबकी है। बाबा बोले, सर्व ब्राह्मणों को दीवाली की दो गिफ्ट मिली हैं। एक मानेसर में और दूसरी सोनीपत में। फिर बाबा बोले कि इतने सब ब्राह्मण आये हैं तो हर एक ब्राह्मण को, या जो नहीं भी आये हैं सर्व को अपनी तरफ से बीज जरूर डालना है। एक तो भण्डारी में तो डालते ही हो लेकिन विशेष बीज जो सबको धरनी में डालना है वह है एक **श्रेष्ठ शुभ भावना का बीज,** दूसरा सदा हर कार्य करते, हर एक के सम्पर्क में आते हुए **कल्याण का भाव** रखना है। तो एक भावना, दूसरा भाव और तीसरा **नि:स्वार्थ साधना।** तो तीन बीज मिलाकर डालना है। चाहे आज हाजिर हैं, चाहे विदेश में, देश में हैं, सबको डालना है।

उसके बाद बाबा ने पूछा और क्या समाचार लाई हो तो मैंने कहा बाबा आज विदेश, देश में सब तरफ बहुत अच्छी सेवायें चल रही हैं। एक तरफ कल्चर आफ पीस का चल रहा है, दूसरे तरफ भारत में वर्गीकरण की सेवायें बहुत अच्छी चल रही हैं, विशेष आत्मायें आ रही हैं। तो बाबा बोले, बापदादा बच्चों की सेवा को देख खुश हैं और मुबारक भी देते हैं लेकिन अभी तक बापदादा की एक आशा का दीपक जगाया नहीं है। जगाया है लेकिन पूरा नहीं, टिमटिमा रहा है, वह है अभी तक सब यह तो मानते हैं कि यह भी संस्था बहुत अच्छा कार्य कर रही है लेकिन यह कहें कि **यह एक ही है, यही है** और सबकी बुद्धि एक ही बाप तरफ जाए और सब जानें कि यह वही है, तब तो प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। अभी तो आपने झण्डा लहराया वह भी लहराना है, लेकिन अब यह प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ।

उसके बाद बाबा बोले, सब बच्चे हर तरफ से उमंग-उत्साह से आये हैं। यह देख बापदादा बहुत खुश हैं, तो बापदादा भी हर बच्चे को गिफ्ट दे रहे हैं - **वह है जिम्मेवारी का ताज।** हर एक समझे हमने वायब्रेशन द्वारा वा शुभ भावना द्वारा वा किसी भी रूप से सहयोगी बनने का जिम्मेवारी का ताज पहना हुआ है और सभी बच्चों को बाबा की तरफ से नाम सहित, विशेषता सहित यादप्यार देना। हर एक का नाम तो बाबा नहीं लेता लेकिन दिल में, नयनों में एक एक बच्चे को इमर्ज कर हर एक को बहुत-बहुत यादप्यार और त्रिमूर्ति उत्सव (दीवाली, नया वर्ष, भैया दूज) की अरब-खरब बार मुबारक दे रहे हैं।